अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

2.2. संबंधित साहित्य के अवलोकन का महत्व

2.3 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.3.1 भारत में किये गये शोधकार्य

2.3.2 एम.एड् स्तर पर हुए शोधकार्य।

अध्याय-द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिकाः

अनुसंधान कार्य के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अति आवश्यक हैं। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानोकोषों, पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधकों एवं अभिलेखो आदि से हैं जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके आभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता है और न ही इस दिशा मे सफल हो सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुये गुड़बार तथा स्केटस (1959) कहते है।

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करनेवालें तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उसी क्षेत्र सें संबंधित सूचनाओ एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक है।"

2.2 संबंधित साहित्य के अवलोकन का महत्वः

1. ज्ञान के क्षेत्र में बिस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
2. पूर्व साहित्य के अवलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त हो सके।
3. पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में लाने की आवश्यकता होती है।

5. किसी अन्य अनुसंधानकर्ता के द्वारा यदि वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया गया हो तो हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा।

अतः उपयुक्त कारणों को देखने से ज्ञात होता है कि साहित्य के अवलोकन का अनुसंधान में बड़ा महत्व है।

2.3. समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकनः

वर्तमान समस्या से संबंधित शोधकार्य अधिक नहीं हुए है। कुछ मिलते जुलते शोधकार्य का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

2.3.1 भारत में किये गये शोधकार्य

1 **इन्द्रपुरकर (1968) :**

"चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन।"

❖ **निष्कर्ष :**

1. छात्र के द्वारा शब्दों को बोलने में बार–बार गलतियाँ होती है।
2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया कि शब्दों के उच्चारण में भी बार–बार त्रुटियाँ होती है।
3. लिखित परीक्षण से यह पाया कि बच्चें सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते है।

2. **अग्रवाल (1981):**

"पठने की क्षमता का ज्ञानात्मक तथा अज्ञानात्मक कारणों के अंतर्गत संबंध का अध्ययन।"

❖ **उद्देश्य :**

विद्यार्थियों की पढने की क्षमता पर व्यक्तिगत ज्ञानात्मक तथा अज्ञानात्मक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

❖ **निष्कर्ष :**

1. छात्र एवं छात्राओं के बीच उनकी पढ़ने की क्षमता, पढने की आदतों, शैक्षिक उपलब्धियों, मितव्यता, अभिभावकों के प्रति उनकी अभिवृत्ति आदि

के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया पर उनकी मौखिक व अमौखिक बुद्धि क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया।

2. कला एवं विज्ञान के छात्र एवं छात्राओं के बीच उनकी पढ़ने की आवृति में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। वह अंतर उनके उच्च एवं निम्न अंको द्वारा निकला गया।

3 **सरसम्मा.एस(1984) :**

"कर्नाटक के कक्षा 8 के अहिन्दी भाषी छात्रों पर हिन्दी के आधारभूत शाब्दिक संग्रह का अध्ययन।"

❖ **उद्देश्यः**

1. कक्षा आठ के विद्यार्थियों की हिन्दी शब्दकोश की जानकारी का अध्ययन करना।
2. कक्षा छठवी एवं सातवी के पाठ्य पुस्तक में दिए गये शब्दों का कक्षा 8 के विद्यार्थियों की समझ का अध्ययन करना।
3. पाठ्यपुस्तक में दिए हुए शब्दों की कक्षा 8के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्तता का अध्ययन करना।
4. कक्षा में शिक्षक व विद्यार्थियों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न शब्दों का अध्ययन करना।

❖ **निष्कर्षः**

1. छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया परन्तु छात्राओं की उपलब्धि थोड़ी सी उच्च थीं।
2. अंग्रेजी व कन्नड माध्यम के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया परन्तु अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि में ज्यादा दृठता पाई गई।
3. सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

4 आनंद (1986):

"कक्षा 5के विद्यार्थियों का लेखन में प्रभाव एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों का निदान दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में उपचारात्मक अध्ययन।"

❖ उद्देश्य :

1. दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालय के कक्षा 5 के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी में की गई त्रुटियों को पहचानना।
2. त्रुटियों के संभवित कारणों का अध्ययन करना।
3. एक उपचारात्मक कार्यक्रम को तैयार करके उसका विद्यार्थियों के ऊपर पड़नेवाले प्रभाव का अध्ययन करना।

❖ निष्कर्षः

वर्तनी मे गलती का कारण मुख्यतः सही तरीके से न बोलना। अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से कोई सुधार का न होना पाया गया। इसका कारण उच्चारण की सही क्षमता की जागृति, पढ़ाने की कमी के द्वारा होना पाया गया, ना कि उम्र के अंतर से। सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों का समुचित रूप से व्यवहार में लाना।

5 देसाई के.जी. (1986):

"कक्षा 4 के विद्यार्थियों की भाषायी क्षमता में कमियों का निदानात्मक अध्ययन एवं उसके सुधार हेतु उपचारात्मक कार्यक्रम"

इसमे शोधकर्ता ने भाषा लेखन संबंधी कक्षा 3 की हिन्दी भाषा पुस्तक का विश्लेषण किया और कठिन शब्दों की एक सूची तैयार की। इसके आधार पर एक परीक्षण तैयार किया गया। न्यादर्श के रूप में कक्षा 4 के 162 विद्यार्थियों जो अहमदाबाद में दो नगर निगम की शालाओं एवं दो निजी शालाओं में पढ़ रहें विद्यार्थियों को लिया गया।

❖ निष्कर्ष :

1. पूर्व की कक्षाओं में जो विद्यार्थियों ने भाषा लेखन सीखा उसमें अनेक दोष है। जैसे लेखन त्रुटियाँ, मिसिंग लेटर, खराब लिखाई, गलत वाक्यरचना।

2. अध्यापकों द्वार नियमित कक्षाएँ न लेने के कारण यह दोष पैदा थे साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों के प्रति रूचि न लेना था- विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में।

❖ **कुमारी नन्दा बी.(1992):**

"मद्रास क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी लेखन में आने वाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन।"

❖ **उद्देश्य :**

1. केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के लेखन में आनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना।
2. त्रुटियों को व्याकरण की दृष्टि से विभिन्न कौशलों में विभक्त करना, त्रुटियों के स्त्रोतो एवं कारणों का अध्ययन करना।
3. सभी त्रुटियों को उनकी महत्ता के आधार पर विभक्त करना और उन त्रुटियों से संबधित अनुपात का अध्ययन करना।

❖ **निष्कर्ष :**

कुल न्यादर्श से 75 प्रतिशत त्रुटियों मे छः प्रकार की व्याकरणीय क्षेत्र में त्रुटियाँ की जो इस प्रकार हैं।

- पद व्याख्या – 97.05 प्रतिशत
- वाक्यांश – 84.07 प्रतिशत
- विराम चिह्न – 88.07 प्रतिशत
- एक शब्द – 81.69 प्रतिशत
- मिलाना – 77.65 प्रतिशत
- विश्लेषण एवं संश्लेषण – 80.86 प्रतिशत

7 **गुप्ता (1998):**

"कक्षा 2 के विद्यार्थियों की भाषा और गणित में अधिगम कठिनाईयों की प्रकृति का अध्ययन।"

❖ **निष्कर्ष :**

निष्कर्ष यह पाया गया कि पढ़ने तथा लिखने में बच्चें बहुत गलतियाँ करते हैं। मौखिक रूप से पठन प्रक्रिया में बच्चें बहुत कमजोर पाए गये, बहुत से गद्यांश के प्रथम वाक्य को भी नहीं पढ़ सके। बच्चें शब्दों तथा वाक्यों की पहचान में भी बहुत सी त्रुटियाँ करते हैं। पढ़ने के

=शल की तुलना में सुनने का कौशल बच्चों में अधिक था। बच्चों कम उपस्थिति अभिभावकों का कम शिक्षित होना तथा गरीब होना भी अधिगम कठिनाई के प्रमुख कारण है।

2.3.2 एम.एड् स्तर पर हुए शोधकार्यः

1. **नूरजहाँ मलिक (1997)**

" प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में हिन्दी विषय की चयनित दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययन।"

❖ **निष्कर्ष :**

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं में शब्दों और वाक्यों को देखकर लिखने की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में अधिक हैं।
2. अक्षरों एवं शब्दों को सही आकर व क्रम तथा उनके बीच की दूरी में अंतर की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रो की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में अधिक है।
3. चयनित दक्षताओं में 80 प्रतिशत दक्षता उपलब्धि का शहरी बालिकाओं में 40 प्रतिशत व ग्रामीण बालिकाओं में 30 प्रतिशत दक्षता हासिल कर ली है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की दक्षता उपलब्धि बेहतर है।

2 **छाया सक्सेना (2001):**

"प्राथमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं की हिन्दी में वर्तनी संबंधी त्रुटियों का अध्ययन।"

❖ **उद्देश्यः**

1. कक्षा 3,4,5 के विद्यार्थियों में हिन्दी लेखन में होने वाली त्रुटियों का अध्ययन करना।
2. अक्षरों एवं शब्दों के सही आकार, क्रम एवं उनके बीच की दूरी के सही अंतर को समझना।
3. लिखने समय होनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना।

❖ **निष्कर्ष :**

1. कक्षा 3,4,5 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में परीक्षण द्वारा यह पाया गया कि लापरवाही, जल्दवाजी तथा लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव की गई है।
2. मात्रात्मक तथा बिन्दुगत की त्रुटियों की अशुद्धियाँ अधिक थी तथा सभी प्रकार की त्रुटियाँ विद्यार्थियों ने लगभग की। असावधानी के कारण त्रुटियाँ पाई गई।
3. मातृभाषा तथा अन्य भाषा के कारण भी बालक–बालिकाओं की लेखन में त्रुटियाँ पाई गई।

3 **पाटिल विजुकांत(2002):**

"हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के विद्यार्थियों का निम्नलिखित प्रकार लेखन त्रुटियाँ का तुलनात्मक अध्ययन करना।"

1. हिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।
2. अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।
3. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण विद्यार्थी।
4. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के शहरी विद्यार्थी।

❖ **निष्कर्ष :**

1. विद्यार्थी अनुच्छेद लेखन से यह पाया कि जल्दवाजी, लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन कठिनाई अनुभव की गई।
2. अरूचि, असावधानी के कारण भावात्मक, बिन्दुगत, चिह्नों, नुक्ता तथा संयुक्ताक्षर– इस प्रकार की लेखन त्रुटियाँ सभी विद्यार्थियों ने लगभग की।
3. मातृभाषा, बोली भाषा के प्रभाव तथा उचित वातावरण के अभाव के कारण विद्यार्थियों ने अनुच्छेद लेखन में त्रुटियाँ की।
4. विद्यार्थियों की हिन्दी का शुद्ध वर्तनी रूप व्याकरण के निमयों की जानकारी न होने के कारण लेखन त्रुटियाँ हुई।